ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-1*February- 2018
Innovation The Research Concept

टिहरी बांध निर्माण से पूर्व बांध विस्थापितों के स्थानीय प्रमुख स्थल तथा प्राचीन मन्दिरों की धार्मिक आस्थाओं का अध्ययन

विजय लक्ष्मी
पद––––लिखें
मानव विज्ञान विभाग,
कालेज––––लिखें
शहर––––लिखें

सारांश

टिहरी बांध भारत की एक प्रमुख नदी घाटी परियोजना हैं। टिहरी बांध दो महत्वपूर्ण हिमालय की नदियों भागीरथी तथा भिलांगना के संगम पर बना है टिहरी बांध दुनिया में उच्चतम बांधों में गिना जायेगा, टिहरी बांध करीब 270.5 मी0 ऊंचा, जो कि भारत का अब तक का सबसे ऊंचा बांध रहा है 600 मेगावाट की विद्युत उत्पादन क्षमता वाले टिहरी बांध और जल विद्युत परियोजना को राज्य क्षेत्र की परियोजना के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा क्रियान्वित किये जाने के लिए मूलतः जून 1972 में अनुमोदित किया गया था। सन् 2001 के दिसम्बर माह से बांध के जलाशय में जल भरना शुरू हो गया। वर्ष 2004 में वर्षा ऋतु में जब उत्तरकाशी में जल वृष्टि से भागीरथी में जल स्तर बड़ा तो टिहरी नगर को पूरा खाली करवा दिया।19 सितम्बर 2005 को बांध के डूब क्षेत्र में पानी भरने का कार्य प्रारम्भ होने के पश्चात वर्तमान में यह लम्बे विशाल जलाशय का रूप ले चुका था, तथा बांध से विधुत उत्पादन का कार्य भी प्रारम्भ हो चुका था। पुरानी टिहरी शहर तथा समीप वर्ती ग्रामीण क्षेत्र का सम्पूर्ण भू–भाग जल मग्न हो चका था।टिहरी बांध परियोजना छोटे दर्जे की परियोजना नहीं है अपितु यह बड़े पैमाने में स्थापित की गयी थी जिसका मुख्य उद्देश्य था– विस्थापितों का चहुमुखी विकास करना तथा विस्थापितों की सामाजिक/सांस्कृतिक धरोहरों का विकास करना। सरकार द्वारा टिहरी बांध परियोजना के विस्थापितों को नयी जगह पर विस्थापन कर दिया गया है। जिसमें उनकी समस्त प्रकार की व्यवस्थाओं पर ध्यान दिया गया है। टिहरी बांध निर्माण से पूर्व विस्थापितों का जन जीवन सुव्यस्थित था, जिसका एक कारण टिहरी को शिव भगवान की नगरी भी कहा जाता था चूकि उस समय वहां पर अनेक भव्य मन्दिर तथा अनेक पूजा– धार्मिक कर्मकाण्ड होते थे। दूर से देखने पर टिहरी शहर पान के पत्ते के आकार का प्रतीत होता था, जो की शिवलिंग के आकार का माना जाता है। पुरानी टिहरी बांध के डूब क्षेत्र के शहरी क्षेत्र में हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, एवं ईसाई सभी धर्मो का प्रतिनिधित्व मिलता था यही कारण है कि वहां कम ज्यादा मात्रा में ''सर्वधर्म सम्भाव'' की भावना के दर्शन होते थे हर धर्म की पूजा पद्धति और विश्वास अलग होते थे अतः निश्चित है कि उनके धार्मिक स्थल और भवन भी अलग अलग विशिष्ट शहर में हर धर्म के अनुयायी समय–समय पर अपने धार्मिक स्थलों का निर्माण करते रहें थे ये धार्मिक स्थल व्यक्ति से धार्मिक मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से अविछिन्नता से जुड़े रहते थे और व्यक्ति में सौहार्द, धार्मिक तथा भावनात्मक विचारों को प्रबल करते थे इनमें व्यक्ति समाज को मानसिक शान्ति प्रदान करने की परम शक्ति ही निवास नहीं करती बल्कि ये वास्तु सौंदर्य के प्रतीक भी होते थे। जिसमें उनके स्थानीय प्रमुख स्थल एवं देवी–देवताओं के मन्दिर व कुषाण कालीन स्थल/पर्ववती मन्दिर आदि थे। जिसका वर्तमान में नई टिहरी शहर में विस्थापन हो चुका है। वर्तमान में भी विस्थापित नई टिहरी शहर में पर्व–त्योहारों को बड़े–धाम से मानाया जाता है, पूजा–अर्चना हेतु अनेक श्रधालुओ का जमावड़ा लगा रहता है। जिसमें की सभी मन्दिर व मस्जिद सम्मिलित किये गये है, सरकार द्वारा पुरानी टिहरी के सभी प्राचीन मन्दिरों का विस्थापन उसी प्रकार से किया गया है जिस प्रकार से वह बांध निर्माण से पूर्व थे।

मुख्य शब्द :

प्रस्तावना

उत्तराखण्ड राज्य का निर्माण एक महान उद्देश्य के लिए हुआ था, जिसमें एक ऐसे राज्य की संकल्पना थी जहां हर नागरिक आत्म–सम्मान और आत्म गौरव के साथ जी सके। जहां हर वर्ग को बराबर समानता मिले। कहीं भी जात पात का भेदभाव न रहे। मातृभक्ति को सम्मान मिले, स्वच्छ एवं संवेदनशील शासन व्यवस्था को और सत्य के शीर्ष से विकास की गंगा पूरे प्रदेश में समान रूप से प्रभावित हो। लम्बे जन आंदोलन के फलस्वरूप उत्तराखण्ड राज्य का निर्माण 9 नवम्बर 2000 को हुआ। यह भारत गणराज्य का 27 वां राज्य है इसके अन्तर्गत दो मण्डल हैं गढ़वाल व कुमाऊं। जिसके गढ़वाल मण्डल में टिहरी गढ़वाल जिला सम्मिलित है। जो कि उत्तराखण्ड राज्य का सुन्दर व कालात्मक रूप से पर्यटकों को मन मुग्ध करनें वाला शहर है। वर्तमान में जो कि टिहरी बांध के नाम से प्रसिद्ध है।

यह भारत की एक प्रमुख नदी घाटी परियोजना हैं। टिहरी बांध दो महत्वपूर्ण हिमालय की नदियों भागीरथी तथा भिलांगना के संगम पर बना है टिहरी बांध दुनिया में उच्चतम बांधों में गिना जायेगा, टिहरी बांध करीब 270.5 मी0 ऊंचा, जो कि भारत का अब तक का सबसे ऊंचा बांध रहा है

पुरानी टिहरी में जिस पर बांध का निमार्ण हुआ था, वह क्षैत्र विकास की दृष्टि से काफी आगे था। टिहरी बांध परियोजना को जब सन् 1972 में अनुमोदित किया गया था उस समय पुरानी टिहरी की सामाजिक स्थित अत्यन्त विकासशील थी, पुरानी टिहरी शहर सन् 1972 में अपने वातावरण से लोगों को वहा बसनें की प्रेरणा दे रहा था।

टिहरी शहर वर्तमान में एक ही नाम से जाना जाता है वहा है 'टिहरी बांध''। चाहे देश हो या विदेश, सभी पर्यटक अब टिहरी शहरी को इसी नाम से जानते हैं। जिसका मुख्य कारण एक छोटे से शहर का पूर्ण रूप से जल मग्न समाधि लेना था।

600 मेगावाट की विद्युत उत्पादन क्षमता वाले टिहरी बांध और जल विद्युत परियोजना को राज्य क्षेत्र की परियोजना के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा क्रियान्वित किये जाने के लिए मूलतः जून 1972 में अनुमोदित किया गया था।

वर्ष 1986 में भारत सरकार में टिहरी जल परियोजना को केन्द्र तथा राज्य का संयुक्त प्राधिकरण बनाया। इस विषय में बांध के निर्माण हेतु सरकार ने रूस से सहयोग मांगा। इसके पश्चात पुनः टिहरी में जल आन्दोलन कर रहे कुछ लोगों ने इस क्षेत्र को भूकम्प के खतरे का क्षेत्र बताया इस सबंध में सरकार ने पुनः भूगर्भ एवं अन्य तकनीकी जांच करवाई किन्तु निर्माण का कार्य चलता ही रहा।

सन् 2001 के दिसम्बर माह से बांध के जलाशय में जल भरना शुरू हो गया। वर्ष 2004 में वर्षा ऋतु में जब उत्तरकाशी में जल वृष्टि से भागीरथी में जल स्तर बड़ा तो टिहरी नगर को पूरा खाली करवा दिया।

19 सितम्बर 2005 को बांध के डूब क्षेत्र में पानी भरने का कार्य प्रारम्भ होने के पश्चात वर्तमान में यह लम्बे विशाल जलाशय का रूप ले चुका था, तथा बांध से विधुत उत्पादन का कार्य भी प्रारम्भ हो चुका था। पुरानी टिहरी शहर तथा समीप वर्ती ग्रामीण क्षेत्र का सम्पूर्ण भू–भाग जल मग्न हो चका था।टिहरी बांध परियोजना छोटे दर्जे की परियोजना नहीं है अपितु यह बड़े पैमाने में स्थापित की गयी थी जिसका मुख्य उद्देश्य था– विस्थापितों का चहुमुखी विकास करना तथा विस्थापितों की सामाजिक/ सांस्कृतिक धरोहरों का विकास करना।

अध्ययन काल

टिहरी बांध पर अनेक प्रकार की किताबों का प्रकाशन भी किया जा चुका है। जिसमें की डा0 गोविन्द चालक भारतीय लोक संस्कृति का सन्दर्भ मध्य हिमालय2008, डा0हरदत्त–गढ़वाली भाषा उसका साहित्य2004, मनिराम बहुगुना–टिहरी अधोपन्थ2013, आर0के0पन्थ–टिहरी बांध का पारिस्थतिक तन्त्र 2013, सम्भुनाथ शुक्ला–टिहरी 2015 (the ten year of injustice) उपरोक्त के आधार पर प्राचीन टिहरी शहर की अनगिनत पहलुओं का अध्ययन मिलता है, जो की टिहरी के ऐतिहासिक बांध निर्माण से पूर्व के सामाज को दर्शाती है। वर्तमान में नवीनतम तथ्य एवं जानकारी स्वअध्ययन पर आधारित(फरवरी2017–5मार्च2017) है

अध्ययन का महत्व

इस अध्ययन का महत्व इस कारण से अधिक बढ़ जाता है कि सरकार ने बांध विस्थापित परिवारों के पुनर्वास के लिए काफी व्यय किया। चाहे सामाजिक स्तर पे हो या आर्थिक स्तर से हों। सरकार ने इनके विस्थापन हेतु अच्छे प्रयास है, एक प्रयास यह भी अच्छा था कि प्रभावित परिवारों में से कई लोगों को रोजगार दिया गया तथा बांध निर्माण के ठेके भी इन्हें दिये गये। तथा उनकी धार्मिक आस्था को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया गया है। पुरानी टिहरी के मन्दिरों व ऐतिहासिक स्थलों के लिये सरकार द्वारा सम्भवतः अच्छे प्रयास नई टिहरी में देखे जा सकतें है।

अध्ययन के उद्देश्य

बांध विस्थापन का वर्तमान नये परिवेश में सामाजिक सामजस्य का अध्ययन करना, इन्हें पुर्नवास में किस प्रकार की कठिनाईया उत्पन्न हो रही है एवं वे अब इस स्थिति में कैसा महसूस कर रहे है इत्यादि पहलुओं का अध्ययन करना और इन समस्याओं का मात्र कुछ व्यक्तियों नहीं, अपितु पूरे राष्ट्र के सामने प्रस्तुत करना

2– उनकी सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन किया जायेगा

3– परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है जिस समाज में परिवर्तन की गति जितनी तीव्र होती है वह उतना ही विकसित होगा। इस सन्दर्भ में इन विस्थापितों की धार्मिक स्थिति का अध्ययन करना।

उपकल्पना

प्राचीनकाल से ही यह क्षेत्र ऋषि–मुनियों की तपस्थली रही है, साथ ही कई गुरूकुलों एवं आश्रमों के होने के कारण शिक्षा का प्रमुख केन्द्र भी रही है। अपनी निराली संस्कृति व परम्परा के लिए यह क्षेत्र प्राचीन समय

से ही अत्यधिक प्रसिद्ध तथा दार्शनिकों एवं खोजी प्रवृत्ति के लोगों के लिए जिज्ञासा का विषय रहा है।

टिहरी बांध के डूब क्षेत्र के शहरी क्षेत्र में हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, एवं ईसाई सभी धर्मो का प्रतिनिधित्व मिलता था यही कारण है कि वहां कम ज्यादा मात्रा में ''सर्वधर्म सम्भाव'' की भावना के दर्शन होते थे हर धर्म की पूजा पद्धति और विश्वास अलग होते थे अतः निश्चित है कि उनके धार्मिक स्थल और भवन भी अलग अलग विशिष्ट शहर में हर धर्म के अनुयायी समय–समय पर अपने धार्मिक स्थलों का निर्माण करते रहें थे ये धार्मिक स्थल व्यक्ति से धार्मिक मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से अविछिन्नता से जुड़े रहते थे और व्यक्ति में सौहार्द, धार्मिक तथा भावनात्मक विचारों को प्रबल करते थे इनमें व्यक्ति समाज को मानसिक शान्ति प्रदान करने की परम शक्ति ही निवास नहीं करती बल्कि ये वास्तु सौंदर्य के प्रतीक भी होते थे।

टिहरी बांध डूब क्षेत्र के सांस्कृतिक महत्व के धार्मिक स्थलों, मन्दिरों एवं भवनों को तीन भागों में बांटा जा सकता है तथा–कुषाण कालीन संरचनाएं, स्थल, 12वी से 17 वीं सदी के मध्य निर्माणित धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत के विभिन्न मन्दिर व 1815 के बाद गढ़वाली महाराजाओं एवं रानियों द्वारा निर्माणित धार्मिक स्थल, धर्म को आधार मानकर वर्गीकृत करने पर इन्हें हिन्दू(शैव, शक्ति, वैष्णव, स्थानीय देवी–देवीता) सिख, ईसाई, मुस्लिम धर्म के धार्मिक स्थलों में विभक्त किया जा सकता है।

कुषाण कालीन स्थल

पुरानी टिहरी नगर के सामने भागीरथी के दांए और दोबाट्टा की तरफ अठुर ग्राम सभा के खाण्ड ग्राम के सीमान्तगर्त बन्दरखेत क्षेत्र में पुरातत्व विभाग से जुड़े कुछ अन्वेषकों को कुषाण कालीन अवशेष ईंटो की दीवारें कुछ मूर्तियां व टेराकांटा तथा मृद्भाण्ड प्राप्त हुये थे श्रमिकों को खुदाई में इसी काल की एक धातु मूर्ति भी यहां मिली थी अक्टुबर 1988 में अठुर ग्राम में एक ताम्र पात्र में धत कुणिन्द रजत–मुद्राऐ तथा दो स्वर्ण छड़े प्राप्त हुयी थी मुद्रा के पुरोभाग पर एक नारी तथा मृग है जिसे कठोच ने महाराजा अमोघभूति की मुद्रा माना है खाण्ड गांव में वैदिक परम्परा का एक यज्ञ स्थल भी मिला था गढ़वाल मन्दिरों और पुरातत्व पर कार्य कर चुके यशवन्त सिंह और कठोत के अनुसार खाण्ड गांव के आस–पास कुषाण काल का कोई मन्दिर अवश्य था जिसके विषय में क्षेत्र में पुरातत्व विभाग सर्वे ऑफ इण्डिया अथवा गढ़वाल विश्वविद्यालय किसी ने भी समय रहते कोई शोधपूर्ण कार्य नहीं किया और बांध कार्य शुरू होने से निर्माण अधिकारियों की लापरवाही से समस्त क्षेत्र नष्ट हो गया यहीं कारण था बाद में भी उसके विषय में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं हो पायी थी और न ही किसी भी प्रकार सूचनांए वर्तमान में इकट्ठी की गई है।

स्कन्द पुराण के केदारखण्ड में वर्णित धार्मिक स्थल

स्कन्दपुराण के केदारखण्ड में वर्णित टिहरी बांध जलाशय के डूब क्षेत्र में पड़ने वाले पौराणिक धार्मिक स्थलों में धनुषतीर्थ, गोपेश्वर शिला, गाणेश्वर लिंगम्, शेषतीर्थ, माल्यवती आश्रम तथा सत्येश्वर मन्दिर को प्रमुखता से गिना जा सकता है 206 आध्यायों वाले केदारखण्ड के अध्याय में भिंलगना नदी के किनारे स्थित शिवलिंग सत्येश्वर महादेव का वर्णन आया है इसमें कहा गया है कि इस सत्येश्व नाम से प्रसिद्ध मन्दिर के दर्शन कामनादायक है और घोर कलयुग में यह सघः विश्वासकारक है।

1. भिलंगना–भागीरथी के संगम पर सकल पाप नाशक उत्तम क्षेत्र था जहां प्राचीन में गणेश ने बृषध्वज शिव की पूजा की जाती थी और वहीं पर रक्तवर्ण की सुपण्यदा गणेश्वरी शिला अत्यन्त पुण्यदायक थी वहां पर शोणित के समान रक्तवर्ण का जल है और वहीं गणेश्वर लिंग शिव भक्ति दायक है उसके दर्शन से मनुष्य मोक्ष को प्राप्त हो जाता था और उस तीर्थ में जो भी भक्ति स्नान करता था वह इस लोक में श्रेष्ठ को भोग कर अन्त में शिव को प्राप्त होता था वहीं वामभाग में महाफल दायक धनुष तीर्थ था ब्रहमा न इस धनुषाकार तीर्थ को बनाया था।

   इस के सेवन से सौ यज्ञ करने का फल मिलता। उसके दक्षिण भाग में शुभफलदायक शेष तीर्थ था उसमें स्नान करके मनुष्य रोगरहित विष्णुलोक हो जाता था गंगा के उत्तरी तट पर मालवती का आश्रम था वहां जाने से मनुष्य शिव लोक में पूजित होता था अधिकतर स्थानीय लोगों को टिहरी में स्थित उपर्युक्त धार्मिक स्थलों में से गणेश्वर शिला के पास एक मन्दिर एक लिंग और ब्रहमा के मन्दिर का निर्माण राजा भवानी शाह ने करवाया था जो दशकों पूर्ण भयंकर बाढ़ आने से नष्ट हो गया था भवानी शाह के 12 वर्षों के शासन काल में किसी भयंकर बाढ़ के आने के प्रमाण उपलब्ध नही होते हैं किन्तु इस बात से इन्कार नही किया जा सकता है कि उसके काल में बाढ़ नहीं आयी थी सन् 1956–57 में तत्कालीन नगरपालिका अध्यक्ष महावीर प्रसाद गैरोला ने इस स्थल पर उत्खनन करवा कर मन्दिर से शिव मन्दिर को भार निकलवा दिया था और शिव मन्दिर व ब्रहमा के स्थल का शुद्धिकरण करवाया था किन्तु 1978 की बाढ़ ने इसे काफी नष्ट कर दिया था और नदी के प्रवाह के दिशा में बदलाव से संगम शिला और मन्दिर दोनों रेत में दब चुके थे। गणेश शिला के कारण ही यह संगम गणेश प्रयाग कहलाया जब टिहरी जीवित थी तो सभी हिन्दू, सिख, ईसाई एवंज जैन धर्मावलम्बी और कुछ मुसलमान भी हर धार्मिक पावन पर्व पर उस स्थान पर स्नान करने पुण्य कमाने जाते थे अनेक स्त्रियों और ब्राहमण तो वहां हर सुबह स्नान करनें जाते थें वहां मकरैणी और पंचमी के अवसर पर भी विशेष धार्मिक मेले लगते थे गंगादशहरे पर भी अनेक भावना से टिहरी के संगम पर स्नान करने विशेष रूप से धार्मिक मानते थे।

2. बद्रीनाथ मान्दिर के नीचे लक्ष्मण कुण्ड होना बताया गया जिसका उल्लेख केदारखण्ड में भी आया है लोक विश्वास है कि इस कुण्ड में स्नान करने से कोढ़ी का कोढ़ दूर हो जाता था और वह शारीरिक रूप से बिल्कुल स्वस्थ्य हो जाता था धनुष तीर्थ के सन्दर्भ में विभिन्न मत मिलते हैं कुछ स्थानीय लोगों

ने इसे भिलंगना नदी पर आक्षरियों के घात, कचहरी रोड़ और घनसाली रोड के चौराहे के नीचे एवं नदी के दूसरे तरफ कण्डल ग्राम के आगे स्थित होना माना थे परन्तु स्थानीय ग्रामीण इसे मालीदेवल और हटवाल ग्रामों के नीचे भागीरथी पर स्थित होना मानते हैं वास्वत में टिहरी में गंगोत्री की तरफ 5 किलो मी0 की दूरी पर गंगा भागीरथी धनुषातीर्थ में बह रही थी सम्भवतः यही केदारखण्ड में वर्णित धनुषातीर्थ थी इसे स्थानीय लोग आज भी धनुषतीर्थ के नाम से पुकारते हैं किन्तु यहां पर ब्रहमा के मन्दिर स्थित होने की जानकारी नहीं मिलती है इस स्थान पर बमरोगी गुफा, भौमासुर का मन्दिर, और सुरजकुण्ड भी स्थित था।

टिहरी राजधानी बनने से पूर्व मन्दिर

वास्तव में टिहरी बांध के डूब क्षेत्र के मन्दिरों के निर्माण सम्बन्धी प्रमाणिक लिखित तथ्य जैसे अभिलेख, ताम्रपत्र या शिलालेक्ष तो उपलब्ध नहीं होते किन्तु स्थानीय विस्थापित ग्रामीणों के अनुसार, मन्दिरों की वास्तुकला एवं शिलालेख तो उपलब्ध नहीं होते किन्तु स्थानीय विस्थापित ग्रामीणों के अनुसार, मन्दिरो की वास्तुकला एवं लगे पत्थरों के प्रकार और उनमें स्थित मूर्तियों के आधार पर निर्णय लिया जा सकता है ये सभी कृत्य साधनों और विशेषज्ञों के अभाव के कारण इतने छोटे स्तर के शोध कार्य के लिए संभव नही, अतः निश्चित है कि शोधार्थी को उपलब्ध सूचनाओं और लोक में प्रचलित विश्वासों, मान्यताओं को आधार मानकर चलना होता है जिसमें तथ्यों की प्रमाणिकता सिर्फ एक तरफा हो सकती है और उसकी विश्वसनीय सौ प्रतिशत सही नहीं मानी जाती है इसके लिएं वास्तव में पुरातात्विक और मौखिक दोनों प्रकार की सूचनाओं की आवश्यकता है हमारी सूचनाओं का मुख्य आधार स्थानीय लोग द्वारा उपलब्ध की गयी। सूचना और उत्तराखण्ड के मन्दिरों पर पुरातात्विक सन्दर्भ में उपलब्ध करवाई गई सूचनाओं पर आधारित है बांध के डूब क्षेत्र में स्थित 1–8 वीं 14वीं शताब्दी के मध्य निर्माणित मुख्य इस प्रकार है–

पुरानी टिहरी का केदारनाथ मन्दिर

केदारनाथ मन्दिर भागीरथी क बांये किनारे पर बद्रीनाथ और दशिण काली मन्दिर के बीच स्थित था। इसकी स्थापना सन् 1890–1895 के बीच राजमाता गुलेरिया ने गंगा बाग में करवाई थी। बारह ज्योर्तिलिगी में श्रेष्ठ केदारनाथ में साक्षात् शिव का निवास माना जाता है और पुराणों में इसे मनुष्य का समस्त पापों के नाशक और माक्षदायक बताया गया है चूंकि गढ़ नरेशों का इन मन्दिरों से अविछिन्न सम्बन्ध रहा है अतः इनके बिना गढ़वाली राजा का राज्य धर्म शक्ति हीन समझा जाता है इस तरह से निर्माण आवश्यक रूपो से मन्दिरों के सामुदायिक वर्गो के साथ यात्रा करने के सिद्धान्त की पुष्टि होती है सम्पूर्ण उत्तर भारत में इस तरह के निर्माण मिलते हैं जहां दूर अगम्य पहाड़ो की चोटियों पर स्थित मन्दिरों को सुविधानुसार मैदानी क्षेत्र में भी स्थापित करवाया गया हैं

मां गंगा मन्दिर

मां गंगा भागीरथी से टिहरी बांध के डूब क्षेत्र के लोक का हमेशा से ही विशेष धार्मिक, आध्यात्मिक व सामाजिक सम्बन्ध रहा है। अतः निश्चित है कि लोक में भी मां गंगा का महत्वपूर्ण स्थान है चूकि टिहरी बांध प्रभावित क्षेत्र में यह मां गंगा का एक मात्र मन्दिर था इसलिये इसका महत्व भी विशेष था। मां गंगा का मन्दिर प्रांगण मे संगमरमर के पत्थर से महारानी गुलेरिया ने बद्रीनाथ केदारनाथ व गोपाल मन्दिरों के साथ ही निर्मित करवाया था जो सभी मन्दिरां से एक मात्र संगमरमर के पत्थर से सुन्दर नक्काशी का बना था इस मन्दिर में स्थानीय एवं बाहर से आने वाले यात्री गंगा दशहरे तथा अन्य पर्व–त्यौहारों के अवसर पर विशेष पूजा–अर्चना किया करते थे बाद में महाराजा मानवेन्द्र शाह ने यहां से लेजाकर हरिद्वार में स्थापित करवा दिया था। उनके अनुसार नई टिहरी में गंगा का कहीं नाम ही नहीं था मन्दिर को वहां कैसे ले जाया जा सकता था गंगा मंया के मन्दिर का गंगा के किनारे होना ही शोभनीय एवं धर्मपूर्ण कहा जा सकता है डूब क्षेत्र के लोक का गंगा भागीरथी से सम्बन्ध था। वर्तमान में जिस कारण दर्शनार्थी व श्रद्धालुओं गण इसके दर्शन के लिये हरिद्वार ही जातें हैं जो की कभी पुरानी टिहरी शहर का एक तीर्थस्थल के रूप में हुआ करता था, इसके दर्शल के लिये अनेकों यहां आया करतें थे।

सत्येश्वर महादेव

सत्येश्वर महादेव मंदिर सुमन चोक से घण्टाघर जाने वाली सड़न पर बांयी ओर भिलंगना नदी के दक्षिण तट पर स्थित था। मन्दिर का निर्माण भवानी शाह के शासन काल में होने और इसके साथ बन हवन कुण्ड, घर्मशालाओं और शक्ति मन्दिर के कारण यहां करना अनुचित न होगा लोक–विश्वासनुसार सत्येश्वर मन्दिर में स्वयं भू ज्योर्तिलिग था इसे पौराणिक महत्व के सम्बन्ध केदारखण्ड में वर्णन आया है कि घोर कलयुग में सत्येश्वर मन्दिर संघः विश्वासकारक था। चतुर्थ भुजाकार इस मन्दिर के तीन ओर के द्वारो पर क्रमशः गणेश, शंकर, पार्वती, व कार्तिकेय की तस्वीरे अंकित की गई थी चौथी ओर से दीवार खाली थी मन्दिरों के पश्चिम की ओर हवन कुण्ड था जिसमें पर्वो–त्योहारों के अवसर पर हवन और शिवरात्रि के अवसर पर मन्दिर में रात्रि भर अखण्ड भजन–कीर्तिन किये जाते रहे थे। उत्तर ओर भिलंगना नदी की खाई, पर्व की ओर बड़ के पेड़ के नीचे शक्ति मन्दिर और मंन्दिर की धर्मशाला थी तो दक्षिण की ओर टिहरी बाजार और सड़क से मन्दिर में जाने की बनी सीढ़ियां थी मन्दिर के आंगन से ही मन्दिर के नाथ संप्रदाय के महंतों की समाधियां भी थी। नर्मदेश्वर महादेव व ज्ञान मन्तों शिववालय के साथ ही सत्येश्वर महादेव मन्दिर के पुजारी राजशाहीं के समय ही गुसाई लोग थे जो कि अब नई टिहरी विस्थापित हो चुके हैं। नई टिहरी में एक तीर्थ स्थल के रूप में यह स्थापित किया गया है। जहां वर्तमान में आनें श्रद्धालुं इसके दर्शन के लिये आतें है। पुरानी टिहरी में यह मन्दिर एक प्राकृतिक मन्दिर के नाम से विख्यात था । जिस शिव लिंग की ल0 व चौ0

अधिक थी, इस लिंग खुदाई के माध्यम से भी नई टिहरी नहीं लाया गया, चूकि यह अधिक बड़ा था।

रामतीर्थ स्मारक

महाराजा कीर्तिशाह के शासनकाल में टिहरी में स्वामी रामतीर्थ टिहरी आए तो कीर्तिशाह ने स्वामी जी के निवास के लिए सिमलासू में सन् 1905–1906 में गोल कोठी का निर्माण करवाया था जिसमें स्वामी जी कुछ समय तक रहे थे। स्वामी रामतीर्थ एक प्रखर वैदिक साहित्य के चिन्तक एवं प्रणेता थे टिहरी के कई सम्मेलन में इन्होनं भाग लिया था। गंगा –भागीरथी के किनारे सन्यास लिया और माली देवता की गुफा तथा सिंचाई की गुफा बमरोगी में तपस्या की थी। आंकड़ो के अनुसार इन्होंन जल समाधि ले ली थी।

श्री देव सुमन स्मारक

ये टिहरी के क्रान्तिकारी आन्दोलनकारी के जन नायक रूप जाने जाते थे। इन्होंने पहाड़ियो का दुःख–दर्द को उजागर किया अनेक भाषणो तथा अनेक सम्मेलनों में गांधी जी के साथ प्रतिभाग किया था। एक आन्दोलन कारी के रूप में इन्होने अनेक यातनांए झेली थी, जिसमें पहाड़ियो के हित के विषय को रखा था इस जनआंदोलनकारी ने। श्रीदेव सुमन का बलिदान ने गढ़वाली समाज को गम्भीर रूप से प्रभावित किया और लोक में जागृति, आत्म–विश्वास जगाया था और टिहरी गढ़वाल का नाम भारतीय स्वतंत्रता आन्दोनल के नक्शे पर नाम दिया था। आज भी यह दिन एक बड़े हर्षो–उल्लास के साथ नई टिहरी शहर में मनाया जाता है। आज भी बड़े ही गर्व के साथ इस जनआंदोलनकारी को याद किया जाता है।

नर्मदेश्वर महादेव–(भट्टो महादेव)

श्री बद्रीनाथ मान्दिर की बांई ओर रघुनाथ मन्दिर के सामने नर्मदेश्वर महादेव का एक छोटा सा मन्दिर स्थित था। जनश्रुति है कि किसी भट्ट ब्राहमण जाति के व्यक्ति द्वारा इस मन्दिर का निर्माण करवाए जाने के कारण ही इसे भट्टो जी महादेव भी कहते थे। इस मन्दिर के सम्बन्ध में एक धारणा थी कि सूखा पड़ने पर यदि मन्दिर के शिवलिंग को पानी में डुबाया जाय तो इन्द्रदेव अवश्य प्रसन्न होते थे। यह मन्दिर भी नई टिहरी में स्थापित कर दिया गया है। जिसका आज भी अधिक महत्व है।

भैरव मन्दिर

टिहरी सुमन चौक में पीपल के बड़े–बड़े पेड़ के नीचे बहुत छाटा भैरव मन्दिर था जिसकी स्थानीय लोग विशेष पूजा करते थे भैरव का यह स्थल सुदर्शन शाह के टिहरी आने से पहले का बताया गया। जनश्रुति के अनुसार यही वह जगह है जहां से उसके घोड़े ने आगे बढ़ने से मना कर दिया था और सुदर्शन शाह को वहीं अपना डेरा डालना पड़ा था टिहरी को राजधानी बनाऐ से पहले इस क्षेत्र में धुनार जाति के दलित परिवार निवास करते थे जिनका पेशा यात्रियों को नदी पार करवाना और मछली पकड़ना था प्रतीत होता है कि यह भैरव स्थल जाति द्वारा विकसित होगा भैरव को सभी हिन्दू जातियों, ब्राहमण से दलित तक सभी के द्वारा समान से पूजा जाता था और इसका सामान्यतः खुला मन्दिर ही होता था जैसा किसी पेड़ के नीचे या बड़े पत्थर पर आदि। यह मन्दिर भी अब नई टिहरी में स्थापित कर दिया गया है। परन्तु जगह की कमी होने के कारण यह मन्दिर छोटी सी जगह में स्थापित कर दिया गया है।

दुर्गा मन्दिर

श्री सत्येश्वर महादेव मन्दिर प्रागण में ही मां दुर्गा का मन्दिर था जिसे संभवतः शाह के काल में ही निर्मित किया गया था रियासत काल में मन्दिर में पशुबलि देने की प्रथा भी थी जो नरेशशाह के काल में बन्द कर दी गई थी नवरात्रियों के अवसर पर मन्दिर में हरियाली डाली जाती थी जिनमें लोग परिवार बच्चों सहित बडी श्रद्धा से भाग लेते रहे थे। दुर्गा मन्दिर को नई टिहरी में बड़े पैमाने पर स्थापित कर दिया गया है इस मन्दिर को बड़े ही भव्य तरिके के साथ बनाया गया है तथा साथ ही साथ मन्दिर के साथ धर्मशालांओं का भी निर्माण कर दिया गया है। मन्दिर की ल0 चौ0 अधिक है। मन्दिर हर तरह जैसे–साज–सज्जा व पैड़–पौधो को भी लगाया गया है। वर्तमान में इस मन्दिर में विवाह जैसे कार्यक्रम भी सम्पन्न होतें हैं।

राज–राजेश्वरी मन्दिर

पुराने राजमहल की चहरदीवारी के अन्दर एक कमरे में सुदर्शन शाह ने श्रीनगर राजमहल वाले श्रीयंत्र को यहां लाकर स्थापित किया था राज–राजेश्वरी गढ़वाली राजाओं की ईष्ट देवी है, अतः इसे क्षेत्र में परम प्रभावशाली माना जाने लगा। मानवेन्द्र शाह के शासनकाल तक देवी के बड़े धूम–धाम से पूजा–अर्चना होती थी और बकरों व बागियो की बलि दी जाती थी जिन्हें ग्रामीण लोग लेकर आते थे किन्तु राजशाही के अन्त होने पर यह प्रथा बन्द कर दी गई और यहां से मूल श्रीयन्त्र ले जाकर नरेन्द्रगर में स्थापित करवाया और टिहरी में नये राज–राजेश्वरी मन्दिर के पुजारी भी पाण्डे जाति के ब्राहमण ही हैं जो कुमांऊ से आए हैं। विस्थापन के पश्चात सरकार द्वारा इसे विस्थापित जगह में नहीं बसाया गया है और न ही किसी अन्य स्थान पर।

शितला देवी मन्दिर

लक्ष्मी नारायण मन्दिर से बद्रीनाथ–केदारनाथ मन्दिर को जाने वाले रास्ते के नीचे, नदी के बायें किनारे चेचक की देवी शीतला का छाटा सा मन्दिर था यह मन्दिर किसने और कब बनवाया इस सम्बन्ध में प्रमाणिक जानकारी नहीं मिलती किन्तु अन्य मन्दिरों के नौटियाल और पाण्डेय जाति के पुजारियों के अनुसार इस मन्दिर की स्थापना महारानी नेपालिया व कीर्तिशाह के काल में हुआ था। जन सामान्य शीतला को रोग की देवी मानते थे इस तरह की भावना लोक में बच्चों के स्वास्थ सम्बन्धि असुरक्षा की भावना अथवा भय की अभिव्यक्ति होती है। टिहरी में स्थानीय लोग चैत्र मास शीतला देवी की विशेष पूजा करते थे जिनमें चढ़ावे के लिए आटे के गुलगुले, चावलों की पिट्ठो और हल्दी चढ़ावे के रूप में चढ़ाई जाती थी।

दक्खिन काली का मन्दिर

दक्खिन काली का मन्दिर श्री लक्ष्मीनारायण एवं बद्रीनाथ मन्दिरों के बीच रास्ते के नीचे स्थित था इस मन्दिर के सम्बन्ध में स्थानीय लोगों में एक जनश्रुति

बहुत प्रसिद्ध थी कि इस मन्दिर की शिला को अपवितत्र कर देने से वह काली के रूष्टता से मूर्छित हो गया और दक्षिण काली ने तत्कालीन महारानी के स्वप्न में आकर कहा कि उन्हें शिला के ऊपर मन्दिर बनवाने के सम्बन्ध में कोई निश्चित तथ्य नही मिलते स्थानीय लोगों के अनुसार यह मन्दिर सम्भवतः महारानी नेपोलिया के समय में बनवाया गया था दक्षिण काली की सामान्यतः चैत्र और अश्विन नवरात्री पर पूजा विशेष की जाती थी। राजशाही के काल में और उसके कुछ वर्षों के बाद तक भी दक्षिण काली को बकरे की बलि दी जाती थी। जिसकी जगह बाद में श्रीफल के साथ ही दिये जाने लगे थे। यह मन्दिर नई टिहरी में मुख्य रूप से नहीं बनाया गया है, शिव मन्दिर के साथ इसको सम्मिलित किया गया है।

लक्ष्मी नारायण मन्दिर

संगम को जाने वाली सड़क के दायीं ओर श्री लक्ष्मीनारायण का प्राचीन मन्दिर था मन्दिर का शोभनीय प्रवेश द्वार पूर्व दिशा की ओर बनाया गया था और छत–टीन की चद्दर की थी मन्दिर में श्री लक्ष्मी जी व श्री नारायण जी की प्रतिस्थापित मूर्तियां थी मन्दिर के प्रांगण में हनुमान का छोटा मन्दिर था जो बाद में बनाया गया था। लक्ष्मी नारायण मन्दिर के पुजारी ब्रद्री महंत(वैष्णव) थे। मन्दिर के बाएं ओर एक बड़ी धर्मशाला बनाई थी जिसमें यात्रा सीजन में दूर–दूर से आने वाले यात्रियों का जमावड़ा लगा रहता था। पर्व–त्योहारों के अवसर पर मन्दिर में विशेष पूजा–अर्चना की जाती थी जिसमें सम्पूर्ण शहर के निवासियों के साथ की आस–पास के गांवो से आने वाले एवं यात्रीगण श्रद्धा से भाग लेते थे।

श्री रघुनाथ व श्री पंचमुखी हनुमान मन्दिर

श्री रघुनाथ व श्री पंचमुखी हनुमान मन्दिर श्री लक्ष्मी–नारायण मन्दिर और नर्मदेश्वर मन्दिर के सामने और रामलीला मैदान के पास स्थित था मन्दिर में राम–लक्ष्मण और सीता की मूर्तियां प्रतिस्थापित थी स्थानीय लोगों के अनुसार स्वामी विज्ञानन्द जी ने हनुमान भितिचित्र को स्वमं अपने हाथों से बनवाया था हनुमान मन्दिर को बहुत प्रभावशाली माना जाता था। जब तक टिहरी जीवित थी, यानि जब तक लोग टिहरी में निवास करते थे तो प्रत्येक मंगलवार को मन्दिर में श्रद्धालुओं की भीड़ रहती थी और हर वर्ष हनुमान जयंती के अवसर पर धूम–धाम से सम्पूर्ण शहर उत्सव मनाता था मन्दिर के पास ही लोगों द्वारा एक चबूतर का निर्माण करवाया गया था जिसम पर शहर के सामाजिक–सांस्कृतिक समारोह सम्पन्न होते रहे थे । यह भी नई टिहरी में स्थापित कर दिया गया है।

गोपाल जी मन्दिर

गोपाल मन्दिर पुराने महल से सटा हुआ था और मन्दिर में राधाकृष्ण की मूर्तियां स्थापित थी। जिन्हें अब नई टिहरी में लाया गया है मन्दिर में लकड़ी का ऐतिहासिक सुन्दर हस्ताशिल्प था जो पहाड़ी हस्तशिल्प का उत्तम उदाहरण था बांध निर्माण कार्य शुरू होने तक मन्दिर में स्वतंत्रता से पहले सामान्य जन नहीं जा सकते थे।

नाग देवता का मन्दिर

नाग देवता का मन्दिर नये राजमहल के सामने स्थित था इसे कीर्तिशाह द्वारा महल के समय स्थापित करवाया गया था। जनश्रुति है कि जब राजमहल बनवाया जा रहा था तो उस पहाड़ी पर अनेक नाग प्रकट होने लगे तो नाग देवता की कोप दृष्टि से बचने के लिए कीर्तिशाह ने इस छोटे से नाग मन्दिर का निर्माण करवाया था।

गीता भवन

गीता भवन का निर्माण पंजाबी समुदाय सत्तर के दशक में बनवाया गया था। भवन के लिए किसी भी पंजाबी पण्डित ने व्यवसायिक सुरंग चन्द्र, लक्ष्मीचन्द्र जैन से जमीन दान मे ली थी। इसका निर्माण करवाया था भवन में श्री कृष्ण मन्दिर और श्री कृष्ण व हनुमान की मूर्तिया थी जिन्हें अब नई टिहरी ले जाया गया है। गीता भवन में यात्रियों के ठहरने के लिए एक बड़ा हॉल था।

आर्य समाज मन्दिर

आर्य समाज मन्दिर मैदान के निकट टिहरी थाने के पास ही स्थित था जिसका निर्माण जज श्री गंगा प्रसाद जी द्वारा 10,000 रू0 में लगभग अस्सी वर्ष पूर्व करवाया था यद्यपि टिहरी में आर्य समाजियों की संख्या बहुत ही कम थी फिर भी मन्दिर के अधिकतर स्थानीय निवासियों का अटूट सम्बन्ध रहा था। यह भी वर्तमान में नई टिहरी में स्थित है।

गुरूद्वारा

टिहरी में यद्यपि सिख धर्मानुयायी बहुत कम मात्रा में बसते थे किन्तु गुरूद्वारे की स्थापना यहां के आग्रह पर की गई थी समवत् 2021 में गुरूद्वारे के लिये नए भवन का निर्माण करवाया गया था जिसमें आगे से आठ–सात्तर के दशक के बाद दुकाने भी बनवायी गयी थी गुरूद्वारे में बैसाखी के दिन बड़ी धूम–धाम से खालंसा पंथ का उत्सव और झण्डारोहण को आयोजित किया जाता था। यह अब नई टिहरी शहर में बन गया है।

पुरानी मस्जिद/नई मस्जिद

टिहरी में मस्जिद का निर्माण कब और किसके द्वारा करवाया गया इस सम्बन्ध में निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं होती किन्तु मस्जिद के मुल्ला और अन्य स्थानीय हिन्दू, मुसलमानों के अनुसार इसका निर्माण 19वीं सदी के अन्तिम दिनों में कीर्तिशाह के शासनकाल में करवाया गया था यह मस्जिद पुराने संगम वाली सड़क पर स्थित थी और ज्यादा बढ़ी नहीं थी इसमें एक बरामदा और दो कमरे थे जबकि अब नई टिहरी में बसने वाले मुसलमान मुख्यतः बिजनौर क्षेत्र से आए माने जाते थे। इसके अलावा टिहरी नगर मे बाल्मिकी मन्दिर गिरिजा घर आदि भी थे। जिनका संचालन छोटे अथवा निजी भवनों स्थलों में होता था। नई टिहरी में भी यह स्थापित हो चुका है। नई टिहरी शहर में यह बड़े ही सुन्दर तथा बड़े पैमाने में स्थापित होच चुका है। जिसमें कई बड़े–बडे कमरे भी हैं। मस्जिद से सम्बन्धी सारी व्यवस्थायें सरकार द्वारा की गयी हैं।

निष्कर्ष

उक्त प्रकार से पुरानी टिहरी त्रिहरी के नाम से जानी जाती थी। इसका अर्थ था शिव की नगरी। यह एक

तीर्थ नगरी हुआ करती थी। दूर–दूर से श्रद्धालु गण यहां आतें थे, ऐसा माना जाता था कि यह आने से सारे कष्टों का निवारण हो जाता था। विस्थापित स्थानों में यह मन्दिर वर्तमान में भी स्थापित कर दिया गया है। वर्तमान में भी पर्व–त्योहारो के समय इन मन्दिरों में खासी भीड़ दिखती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार*
2. *आर.ए. देसाई(1969 Rural Sociology in The India)*
3. *आस्था बी.एन.जैन टिहरी हाइड्रो डेवलपमेंन्ट कारर्पोरेशन।*
4. *आजाद चन्द्र शेखर, गढ़वाल के लोक नृत्य हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 1981।*
5. *भक्त दर्शन गढ़वाल की दिवंगत विभूतियां 2010*
6. *चन्द्र पाल सिंह रावत गढ़वाल और गढ़वाल 2011*
7. *डॉ रणवीर सिंह चौहान उत्तराखण्ड के वीर भड़2001*
8. *शिव प्रसाद डबराल उत्तराखण्ड का इतिहास 2007*
9. *:डा0 प्रेम दत्त चमोली गढ़वाल की संस्कृति साहित्य की देन*
10. *जी0 आर मदन समाज कार्य1998*
11. *डा0 शिव प्रसाद नैथानी खण्ड के तीर्थ एवं मन्दिर 2007*
12. *रविन्द्र नाथ मुखर्जी सामाजिक शोध 2004*
13. *डा0 गोविन्द चालक भारतीय लोक संस्कृति का सन्दर्भ मध्य हिमालय 2008*
14. *डा0 हरिदत्त गढ़वाली भाषा उसका साहित्य2004*
15. *सम्भुनाथ शुक्ला टिहरी 2015 (the ten year of injustice)*
16. *मनिराम बहुगुना, टिहरी अधोपन्थ 2013*
17. *आर0के0पन्थ, टिहरी बांध का पारिस्थतिक तन्त्र 2013*
18. *नवीनतम तथ्य एवं जानकारी स्वअध्ययन पर आधारित(22फरवरी2017–05 मार्च2017)*